Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकंठ

प्रगतिशील लेखन के लिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंच
प्रगतिशील लेखन के लिए
पंजी. सं. MPHIN/2000/5141

दिसम्बर 13 - जनवरी 2014
वर्ष 12 अंक 151-152

जनसंपर्क संचालनालय म.प्र. भोपाल
विज्ञापन कोड क्रमांक 3121

इस अंक के रचनाकार

- ओम भारती की टिप्पणी-सुरेश सेन निशांत की कविताओं पर।
- विशेष कवि-सुरेश सेन निशांत
- चंद्ररेखा ढडवाल की कवितायें
- प्रभा मुज़ुमदार की कवितायें
- महेश अग्रवाल की ग़ज़लें
- मुकेश जैन की कवितायें
- नितिन जैन की ग़ज़लें
- जनार्दन मिश्र की कवितायें
- पद्मनाभ गौतम की कवितायें
- महाश्वेता चतुर्वेदी के गीत
- जया नर्गिस की ग़ज़लें
- डॉ. मधुर नज़्मी की ग़ज़लें
- सजीवन मयंक की ग़ज़ल
- एम.एस.पटेल की कविता
- मनुस्वामी के संग्रह पर सविता मिश्र की समीक्षा
- किशन तिवारी के ग़ज़ल संग्रह पर शिव कुमार अर्चन की समीक्षा
- संदीप राशिनकर के संग्रह पर ज़हीर कुरैशी की समीक्षा
- आयोजन – जया नर्गिस सम्मान समारोह
- आवरण – संदीप राशिनकर, 11 बी, राजेन्द्र नगर, इन्दौर 12
- रेखांकन–राघवेन्द्र तिवारी, ई–एम, 33, इंडस टाउन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

एक अंक की सहयोग राशि – 20 रूपये ■ वार्षिक 200 रूपये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

Poetry
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अग्निशेखर और क्षमा कौल द्वारा यह पुस्तक सप्रेम भेंट

ओम भारती

लोक की सहज निष्ठा

आकंठ में समकालीन हिन्दी कविता के हस्ताक्षरों की विशिष्टताएँ चीन्हकर, उन्हें वांछित अधिमान देते हुए प्रकाशित करने का क्रम वर्षों से चल रहा है। इस बार हम बढ़ते हैं हिमाचल के चर्चित युवा कवि सुरेश सेन निशांत की कविताओं के हमकदम होकर। उनकी आठ कविताएं यहाँ हैं जिनमें पहाड़ी गाँवों के सुख–दुख और संघर्षों को समेटता लोक अपनी विविधताओं और विविधताओं समेत बोलता–डोलता और अपने को खोलता है। इनमें कवि–संवेदना की सहज प्रवेशक एवं बेधक विलक्षणता तो है ही, उसे ठीक वैसा ही अभिनीत, अभिव्यक्त और संप्रेषित करने की ललक, कसक और ठसक भी खूब है। कहीं कहीं अप्रत्याशित अर्थोन्मेष भी है।

सुरेश सेन निशांत की पहली कविता 'बिजली का बिल' उस स्त्री को लेकर है जो बिजली–दफ्तर में अपने घरू बिजली बिल के ज्यादा (अर्थात् अन्यायपूर्ण) होने का दुखड़ा लेकर आई तो है, परन्तु उसकी सुनवाई के लिए कहीं कोई नहीं। सब जानते हैं कि पूँजीपतियों से करोड़ों की खपत का वास्तविक बिल वसूलने में इसी व्यवस्था के हाथ–पाँव फूल जाते हैं। अवैध उपभोग की खुली छूट देने के लिए भी वह उनके आगे सदैव नत रहती है। लेकिन साधारण नागरिक के सामने उसका चरित्र यांत्रिक और हृदयहीन हो जाता है। जन–शोषक तंत्र के विरूद्ध कविता का यह साहसिक हस्तक्षेप है और मार्मिक टीप भी – 'फूल रही थीं गर्व से/पूरी की पूरी, बिजली विभाग की दीवारें/ सहमा हुआ था बिजली का बिल/जिसे छोड़ गई थी वह एक मेज पर'।

दूसरी कविता घोर कष्टों से घिरे किसान के हारकर हथियार डाल देने (और हताशा में शराब के शरणागत हो जाने) के विरूद्ध खड़ी है, और उसे अनय–तंत्र से भिड़ने हेतु अपना होश, अपना हरापन बचाये रखने की मशविरा दे रही है। आगे, पहाड़ी–जीवन में जितने भी दुख के पहाड़ हैं, वे उस स्त्री की मासूम हथेलियों में उतरे हुए हैं, जो भले ही डरते–डरते दिन काट रहीं हो, लेकिन है संसार की 'सबसे सुंदर स्त्री'। कवि उसके हाथों में अपने जीने की डोर देखता है और उसकी व्यथाओं का छोर भी– 'मैं पकड़ता हूँ तुम्हारे हाथ/जैसे घने अंधकार में सूरज की रोशनी/जी लेने का अहसास/जैसे कई जन्मों तक साथ निभाने का विश्वास पकड़ता हूँ'। पहाड़ी जिंदगी के

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.

Acc No....58226
Dated....28/12/23
CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्झर की निर्मलता, वेग, आवेग और सांगीतिक ध्वनियों वाली ये कविताएं ठीक अपनी ही जमीन पर खड़ी हैं। ये तीनों खूबसूरत प्रेम–कविताएं हैं।

इस जमीन पर किसान मात्र फसलें नहीं उगाते, अपना प्रेम, श्रम, श्रद्धा और ममत्व भी बोते हैं। भूमि को बचाये रखने के लिए वे अपने प्राण भी देते हैं, और यह जमीन अपने ऐसे अपत्यों के लिए सदियों तक अश्रु भी बहाती है। ध्यान दीजिए कि इस (क्रम में छटवीं) कविता में नदी माँ के रूढ़िबद्ध रूप में नहीं है, वह तो किसान की दुहिता है, और ये किसान नदियों को अपनी बेटियों की नाई पोसते हैं, उनका ख्याल रखते हैं। तो यह भी **सुरेश सेन निशांत** का लीक भंजक प्रस्ताव है जो अभिनव तो है ही। 'इस जमीन पर' शीर्षक कविता इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। 'चिन्तामणि' में आचार्य शुक्ल का वाक्य है – 'कविता से मनुष्य – भाव की रक्षा होती है'। ये कविताएं इसी मनुष्य–भाव की और विशेषत: करूणा की प्रतिष्ठा में हैं। 'कसूरवार' कविता हो या फिर चार अंशों में समेटे गए पहाड़ की काव्यात्मकता, यहाँ भी इस कवि की सहज लोकधर्मिता और स्पष्ट लोक–संलग्नता सिर चढ़कर बोलती हैं। वह जानते हैं कि पहाड़ों में घटित हाल ही की त्रासदी का असली अपराधी सत्ता और लोभी सरमाया का वह अपवित्र गठजोड़ है, जिसने पर्यावरण को मुनाफे के लिए लगातार क्षत–विक्षत किया है। 'हजार हजार बाँहों वाली' के नागार्जुन याद आते हैं – 'हाँ, पानी में आग लगाओ/नदियाँ बदला ले ही लेंगी'।

अंतिम कविता 'पहाड़' में भी **सुरेश सेन निशांत** अपने चिर–परिचित परिवेश अर्थात् कष्ट–कंटकों में पलते पर्वतीय जीवन की तस्वीरें खींचते हैं। वे अंग्रेजी के लोकल (यानी स्थानीय) को हिन्दी के लोक से अलगाकर देखने–बूझने की समझ रखते हैं। वे स्थानीयता के मार्फत लोक की सहज निष्ठा और उसके अनउघरे अवयव कविता में ले आते हैं। जहाँ आपको अनेक चर्चितों का प्रिय करतब यानी लोक को भुनाने और लुभाने का शौक शायद नहीं मिलेगा। लोक के क्लेश जरूर हैं जो विशालतर संदर्भों तक जा रहे हैं। लगता है कि बारीक–सी बुनावट की बेतुकी और बनावट के मशीनीपन ने उन्हें विजित नहीं किया है। वे अपनी भाषा के प्रवाह को अपने चहुँओर के जीवन के प्रवाह में बाँधते हुए चले हैं।

पाठ्क मुझसे सहमति बनायेंगे कि **सुरेश सेन निशांत** ने विडम्बना एवं विरोधाभास जैसे काव्योपकरणों का इस्तेमाल संयत रहकर किया है। एक शोग गीत का सहोदर–सा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगता अवसाद भी इनमें है जो कवि के देखे–सुने को, भोगे हुए को ही नहीं, उसके स्मृति–कोष को बेहतर परिभाषित करता हुआ–सा है। कुछ नये संयोजन, कतिपय नयी ध्वनियाँ और समकालीन चुनौतियों का नया–सा प्रत्युत्तर खोजने की कोशिश यहाँ है तो प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ मनुष्य के बदले हुए समीकरणों को सीधे सिरे से खोज भी। अपने समय–विशेष से, सामयिक घटना क्रम से स्वयं को बाहर रखकर तो शायद ही कविता लिखी जा सकती है। यहाँ कविता का किस्से के भेष में आना नहीं है, कहानियों को कविता के फरमे में ठूँस दिए जाने जैसा काम भी यहाँ नहीं है। यह कवि अपनी भाषा को खासी सहूलियत के साथ बरतना जानता है और संप्रेषण के लिए पसीना–पसीना होता नहीं दिखता। आइये, कविताएँ पढ़िये।

●

द्वारा इलाहाबाद बैंक मंडलीय कार्यालय, गौतम नगर
भोपाल (म.प्र.) – 462023
मोबा. 09425678579

।। साखी प्रकाशन के संग्रह।।

''स्वागत अभिमन्यु'' (कहानी संग्रह) मूल्य – 250/–

ओम भारती

''तवा का तेज'' (कविता संग्रह) मूल्य – 200/–

श्रीराम निवारिया

संपर्क : साखी प्रकाशन, 509, जीवन विहार कॉलोनी
पी.एन्ड टी. चौराहा के पास, भोपाल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्म : 12 अगस्त 1959

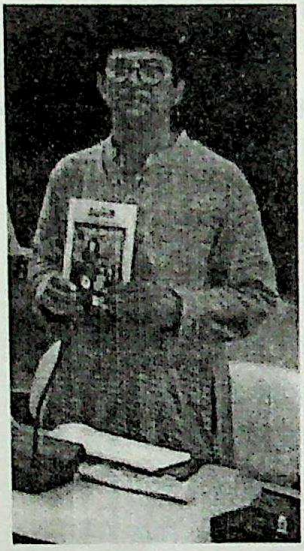

आकंठ के समकालीन हिमाचल कविता विशेषांक विमोचन समारोह ऊना (हि.प्रे.) में।

सुरेश सेन निशान्त

1986 से लिखना शुरू किया। लगभग पाँच साल तक ग़ज़लें लिखते रहे।

1992 से कविता लिखना शुरू किया। हाल के वर्षों में कई कविताएँ देशभर की तमाम प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। **वे जो लकड़हारे नहीं हैं** चर्चित कविता संग्रह

पहला प्रफुल्ल स्मृति सम्मान, सूत्र सम्मान 2008 प्राप्त।

दसवीं तक पढ़ाई के बाद विद्युत संकाय में डिप्लोमा।

फ़िलहाल कनिष्ठ अभियंता के पद पर कार्यरत।

संपर्क :
द्वारा–श्री कुलदीप सिंह सेन, गाँव–सलाह,
डाकघर–सुन्दर नगर – 1,
जिला–मण्डी (हि.प्र.)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशेष कवि

सुरेश सेन निशांत

बिजली का बिल

// एक // बिजली का बिल लिये देर तक
घूमती रही थी विद्युत विभाग के
दफतर में वह अधेड़ औरत
उसे शिकायत थी कि
बहुत ज्यादा आ रहा है उसका बिल
उसके बस का नही है
इतना बिल भरना करना ।

रोटी से भी महंगा
हो गया है यह उजाला
छीन लिया है इसने चैन
इस उजाले से तो दूर ही भली मैं
बिजली विभाग का कोई अफसर
कोई कारिन्दा दे मेरी
इस गुजारिश की तरफ ध्यान

सभी कर्मचारी थे चुप
बढ़े हुए बिजली के भाव
रोज की घटना थी उनके लिये यह
हो गये थे अभ्यस्त
लोगों की जली कटी सुनने के ।
पर रोने को हो रही वह औरत
कहे जा रही थी
कि उसके बस की बात नहीं
यह बिल अदा करना /

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह रुआंसी सी पूछती फिर रही थी
किसे के पास करूं शिकायत
किस दरवाजे को खटखटाउं
किस के पास रोऊँ अपना रोना ।
थक हारकर उस बिल को
एक मेज पर रखते हुए बोली
काट दो मेरे घर की बिजली
मैं जी लूंगी अंधेरे में ही
हाथ से झल लूंगी पंखा
यह कहते हुये
फिर रुधते गले से निकल गई वह ।

बाबू थे उसी तरह व्यस्त अपने काम में
निर्विकार भाव से मुस्करा रही थी
दीवार पर टंगी मुख्यमंत्री की फोटू
हंस रहे थे दीवार पर टंगे आंकड़े
चिढ़ा रहा था आंकड़ों को पार करता
रिकार्ड उत्पादन
फूल रही थीं गंर्व से भरी
पूरी की पूरी बिजली विभाग की दीवारें

सहमा हुआ था बिजली का बिल
जिसे छोड़ गई थी वह एक मेज पर ।

●

कसूरवार

// दो // क्या कह कर पुकारूं
इस नदी को जिसके क्रोध में
डूब
खत्म हो गया हमारा बीहड

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और गांव ।

कसूरवार बादल होते
तो एक छड़ी से पीटता
इनको खूब
कसूर नदी का होता
तो कभी न करता मैं उससे बात
कसूर इन विशाल शिलाओं का होता
तो तोड़ देता बारूद से
इन सभी का गरूर
कसूर पहाड़ों का होता
तो चला जाता रूठकर इनसे
बहुत दूर

कसूरवार तो दूर बैठा
दे रहा है दिलासा मृतकों के
परिजनों को ।
अभी अभी भेजी है उसने
सहायता की एक खेप ।
कभी वक्त मिला तो
आयेगा वह खुद भी ।

अभी तो वह डरा हुआ है
नदी के क्रोध से
पहाड़ों के जख्मों से
चटटानों के आंसूओं से
हमारे जनों के शवों से
उठती दुर्गन्ध से ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डरते डरते

एक

// तीन // वह डरते डरते
थामती है मेरा हाथ ।
वह डरते डरते
चूमती है मेरा माथ ।
डरते डरते करती है
सुबह से शाम तक का सफर ।

वह डरते डरते उतरती है
अपनी नींद में
और भय से भरी पहुंच जाती है
सपनों की दुनिया में
वहां भी वह डरते डरते पूछती है
अपने आप से
कि कहीं गलत तो नहीं
कर रही है वह कुछ ?

एकांत हो चाहे भीड़ भरी जगह
वह डरते डरते
इतनी कुशलता से पोंछती है
अपनी आंखों से ढुलकता आंसू
कि किसी को भनक तक न लगे
उसके इस दर्द की ।

वह डरते डरते
थामती है मेरा हाथ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो

मैं जब
उसकी आंखों में उतरा
मुझे याद आई
बचपन की वह
नीली गहरी पवित्र झील
जहां मां ले गई थी
मुझे नहलाने
उतारने सारे मेरे अपशगुन ।

तीन

उसकी खुरदरी
मासूम हथेलियों पर
वह सब कुछ था
जो पहाड़ भर में होता है
सिवाय सुखों के ।

●

मत जलाओ हरापन

।। चार।। भाई तुम शराब क्यों पीते हो
क्यों जलाते हो
अपने इन चार खेतों का हरापन
क्यों चार फलदार पेड़ों को
फलने से पहले ही काट देते हो ?

क्यों अपने ही घर के
खुशनुमा दिनों की आंखों में
मिर्चों का कड़वा धुआं घोल देते हो ?
मुसीबतों का कद

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत बड़ा है– भाई
बहुत पैनी है इन मुसीबतों की नजर
तुम कितना ही छुपो
नशे की बोतल के पीछे
वे तुम्हें ढूंढ ही लेगी ।

भाई तुम भूल गये हो
उन गीतों को
गूंजा करती थी
जिनकी प्रतिध्वनि इन पहाड़ों पर
यहां वहां ।
भाई तुम भूल गये हो
अपने ही देखे हुए स्वप्न
अपने ही कुल्हाड़ी से
काट रहे हो अपने ही बोये पेड़, और
जीवन का हरापन ।

भाई तुम खिलौना बन गये हो
अपने ही दुश्मनों के हाथों का
वे दबाते ही तुम्हारी सबसे कमजोर नस
और तुम फंस जाते हो उनके जाल में ।
भाई तुम पछताते हो
अपनों को गालियां
अपनों से लड़ते हो और
अपने ही आंगन में जलाने लगते हो
अपनी खुशियां ।

भाई तुम्हें पता है अपनी कमजोरी का
तुम्हें पता है कहां होते हो तुम परास्त
कहां हारता है तुम्हारे अन्तस में बैठा
पराक्रम ।

वे चालक बहेलिये हैं भाई

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरे पहाड़ में फैला रखा है
उन्होंने अपना जाल
वे जानते हैं कैसे घेरना है हमें
हमें भी सीखना होगा भाई
कैसे बचना है कैसे देनी है
उनको मात ।

भाई तुम शराब क्यों पीते हो
क्यों जलाते हो
अपने इन चार खेतों का हरापन
क्यों चार फलदार पेड़ों को
फलने से पहले ही काट देते हो ?

●

इस जमीन पर

।। पांच ।। यह जमीन
जहां बोते है वे फसलें
धरती का टुकड़ा भर नहीं ।

यह माँ है उनकी
जहां उनका प्यार पौधों की
मुस्कानों में फलता है
पकता है फसलों का रूप धरे
जहां उनकी देह का नमक
फूल बन कर खिलता है
जहां उनके पसीने की महक
रातरानी की संगत में
दूर तक बिखर जाती है
उनके गीतों की गूंज बन कर ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये नदियां महज जल का
भण्डार नही हैं
ये बेटियां हैं उनकी
उन्हीं की तरह रखते हैं वे
इनका भी ख्याल
मुड़ मुड़ कर देखते हैं
इनकी हंसी
इनका रूठना
रूलाता है इन्हे बहुत ।

अपनी औलाद सा चाहते हैं
धरती पर खड़े इन पेड़ों को
इन्हीं किन्हीं पुराने पेड़ों में
बसता है उनका ईश्वर ।
यह जमीन
जहां बोते है वे फसलें
धरती का टुकड़ा भर नहीं है ।

वे लड़े हैं खूब
इस जमीन के लिये
लड़ी हैं कई बड़ी लड़ाईयां
वे मरे भी हैं इस जमीन पर
इस जमीन को बचाते हुये ।

उनकी याद में
सदियों तक रोई है जमीन
भले ही कहीं न टंगे हो
उनके नाम पट्ट ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबसे सुन्दर स्त्री

// छः // धरती की सबसे सुन्दर स्त्री
कौन कहता है कि
तुम सुन्दर नहीं हो ?

तुम्हारे शब्दों का मरहम
भर देता है मेरे बड़े बड़े घाव ।
तुम्हारे हाथों का स्पर्श
जिन्दा कर देता है
मेरी बन्जर धरती के
मरे हुये अहसास ।

तुम्हारी प्यार भरी निगाहें
नहीं मुर्झाने देती
मेरी इच्छाओं के फूल
नहीं सूखने देती
मेरी नदियों का जाल ।

कौन कहता है कि
तुम सुन्दर नहीं हो
धरती की सबसे सुन्दर स्त्री ?

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे हाथ

।। सात ।। मैं पकड़ता हूं तुम्हारे हाथ
जैसे जीने की डोर पकड़ता हूं
जैसे गोबर से लीपी इन दिवारों पर
तुम्हारे उकेरे हुये
मोर पकड़ता हूं ।

जैसे तितलियों के पंखों पर बैठ
फूलों के रंग पकड़ता हूं
इस धरती पर सलीके से चलने का
ढंग पकड़ता हूं ।

जैसे दूर बहते पानी की हंसी
और इन कच्ची पगडंडियों पर
तिनके सा उड़ते
तुम्हारे दुखों का छोर पकड़ता हूं ।

मैं पकड़ता हूं तुम्हारे हाथ
जैसे घने अन्धकार में सूरज की रौशनी सा
जी लेने का अहसास पकड़ता हूं
जैसे कई जन्मों तक साथ निभाने का
विश्वास पकड़ता हूं ।

मैं पकड़ता हूं तुम्हारे हाथ ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़

 एक

पहाड़ अच्छे लगते हैं
अच्छी लगती है
उनपे उगी हरियाली
नहीं सताती
यहां तेज धूप ।

जून का महिना है
गर्मी से बचने के लिये
आये हुये लोगों को
पहाड़ अच्छे लगते हैं ।

यहां बरसात में फंस जायें
तो गलियां देंगे वे पहाड़ को
इसकी कमजोर होती देह
बूढ़े बैल सी हर कहीं बैठ जाती है
धसक जाती है हर कहीं
उन पर बनी सड़कें
रोक देती है
घर पहुंचने का रास्ता ।

डरावनी लगती है
लुढ़कते हुये पत्थरों की आवाज
भय से भर देता है
अपने तटों को तोड़ती
नदियों का शोर ।
बादलों का क्रोध में फटना
आम बात है यहां
बरसात में ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो

सर्दियों में भी आ सकते है
पहाड़ पर आप
उन मशहूर स्थानों पर
फर का नया गर्म कोट पहनें
बर्फ गिरती है यहां पर कभी कभी
पहले हर बरस गिरती थी ।

सड़कें यहां
सीमेंट ढोने वाले ट्रकों ने
अपने कब्जे में कर रखी है
संभलकर करें पार
गड्डों को भी
दूर पहाड़ों पर गिरती बर्फ
कर सकती पुलकित
अभी भी आपका मन ।

कर सकती है तर
आपकी देह और मन को
यहां के सेवों की मिठास

कई बरसों तक
लुभाता रहेगा आपको
आपके फोटूओं में कैद
यहां का यह बचा हुआ सौंदर्य ।

तीन

नये जंगल नये पेड़
हमनें नहीं देखे यहां पनपते हुये
हम जो यहां जन्में हैं
पुराने पेड़

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिल जायेंगे स्वागत में
हिलाते हुये अपने हाथ
भय से भरी उनकी कंपकंपी
दिखती नहीं
दिखती है विज्ञापन पट्टों पर
सजी उनकी हंसी
दिखता है उस हंसी से सिहरता
पूरा पहाड़ ।

चार

यहां के जवान लड़के
दूर तपते शहरों की ओर
निकल गये हैं
रोटी की तलाश में ।
पहाड़ उन्हें निहारते हैं दूर से
रहते हैं अक्सर उदास
उनकी याद में

हवा की सायं सांय में
भरते हैं पहाड़ अपनी उदासी
जिसे सुनती हैं यहां की औरतें
मिलाती है पहाड़ की आवाज में
अपना भी विलाप

जिसे लोग गीतों की तरह सुनते हैं ।

●

गांव सलाह, डाक सुन्दर नगर–1
जिला मण्डी, (हि.प्र.) पिन 174401
मो. 9816224478

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्द्ररेखा ढडवाल

पेड़ सुनो

// एक // क्या तुम जा नहीं सकते
योजनों मील दूर धरती में
जहां जल स्त्रोत
अभी सूखे नहीं हैं

हरिया नहीं सकते
तुम्हारे पत्ते कुछ और
अपने में ज़रा–ज़रा घुलते
काले धुएं के बावजूद

किन्हीं पलों विशेष में
हो नहीं सकते
ऐसे वायवी
कि तुम्हारे आर–पार होती
आरी के बाद भी
तुम रहो

क्यों उग नहीं सकते
मेरे भीतर
जब तुम्हें बीज करते हुए
मैं वो दूं तुम पर
कई–कई मंजिला इमारतें

पेड़ ! तुम समझते क्यों नहीं
मुझे तुम्हारी
कितनी जरूरत है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीन कविताएं

(1) देवदार मेरे पहाड़ के

/

/ दो //   शीर्ष पर शुभ्र आकाश
आस–पास बहती
गुनगुनाती मुक्त बयार
पांव तले
ठोस और सुखद
आसन होकर बिछी मिट्टी

इन सब के होने की
आश्वस्ती के मीठे आलस्य में
उलम्ब बाहू प्रार्थनारत सन्यासी
आंखे खोलो
देखो मटमैला रूआंसा अम्बर
इमारतों और अपने बीच
निज सांसों के लिए
कराहती वन्दिनी हवा
और रेशा–रेशा
गन्दे नालों में घुलती बहती जाती
पैरों तले की जमीन

जागो और सोचो
तुम्हारी चैन में बाधा हो रही
चीजों के खिलाफ
तुम क्या कर सकते हो

एक तो यह कि अवशेष जीवी हो जाओ
रंग–रोगन से लिपी–पुती
चमकती छत से निकल कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वट–वृक्ष की जड़ों समान
भेद दो परछाइयां दिखा फर्श की रौनक....
दरवाजे की चौखट / खिड़की के पल्ले
बैठक में सजे बुद्ध / गांधी
मोर कबूतर
मां के बेलन
लाड़ले के बैट में से
उगो / बढ़ो / लहलहाओ
पुनः हो जाओ
छांव / हवा / पानी
धरा बांटते
विशाल काय देवताओं के तरू
देवदार सुनो !
यह तुम्हारे ही नहीं
मेरे होने की भी
अनिवार्यता है ।

●

(2) वे आने लगे हैं

अपने नगर को
रत्ती–रत्ती कंकरीट में तबदील करके
वे आने लगे हैं
पर्व त्यौहार
अवकाश के बहाने
मौसम ! बे मौसम
देवदारों से घिरी
आरामगाहों में
ठण्डी सुगंध होती
हवा के लिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूई के फाहों सी
धरती को निशब्द चूमती
बर्फ के लिए
अपने संग बोलते बतियाते या
मेले–ठेले में
ऐश्वर्य परोसते ।
अपने साथ–साथ
हर बार लाने लगे हैं
अस्त्र नए–नए
जुदा दराती / कुल्हाड़ी / आरी से
ढांप लपेट कर
सुनहरी रंगीन कल्पनाओ की
स्वीकृत होने को तय
या पहले से
स्वीकृत योजनाओं के
लुभावने संधि पत्रों में

●

(3) सुनो

कवि सुनो !
जितनी कविताएं लिखना
उतने तुम पेड़ उगाना
बढ़ेगे / फलेंगे पेड़
तो रहेंगी / कहेंगीं कविताएं ।

●

 CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह क्षण उनका है

।। तीन ।। वह क्षण तुम्हारा था
जब उनके बस्ते में
किताबों की जगह तुमने रख दिया
एक हलफनामा
स्याही से अंगूठा ही नहीं
हथेली तक रंग कर
तुम्हारी सुसंस्कृति के वाहकों के सम्मुख
उन्होंने पोत दिया जिसे
पहली कोशिश कठिन रही होगी
पर फिर अनायास हुआ सब
पहले मैं / पहले मैं की होड़ में दर्ज कर दी गई
कई–कई स्वीकृतियां
एक–एक स्वीकृति पत्र पर
जिस पर खिंची आड़ी तिरछी लकीरों का
रहस्य जिन्होंने कभी नहीं जाना
तुम्हीं ने दिए सारे लिखे / अनलिखे को अर्थ
किसी महामंत्र की तरह जिन्हें धारण किया
सबने नतमस्तक
कि उनके मन उनकी मेधा
उनकी वाणी, उनकी गति के सब गीत
गेय उस एक ही छंद में
जिसकी छोटी / बड़ी
सारी की सारी मात्राएं बन्दी है
नित नवीन रूपाकर और वेष धरते
दैत्य के ब्रह्मरन्ध्र में
इसीलिए वार मस्तिष्क पर ही करना है
पहचान उनकी सामर्थ्य नहीं
तुम्हीं दोगे निर्देश, निर्द्वन्द और अकाटय...
आरम्भ में प्रतीक्षारत रहे वे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर भांपने लगे संकेत
फिर किसी खून लगे जानवर की तरह
सूंघने लगे आदम जात की गंध
यह क्षण उनका है
वे नहीं जानते किसी एक भी प्रार्थना का
वाक्य विन्यास
वे नहीं गाते मृदु प्रणय गीत
उनके छंद–बंद सब संग्रहीभूत
हाथों की भयावह मशक्त में
जिसमें इतने पारंगत वे
कि खेल सा आसान और प्रिय हो चला है सब
अब क्षण घातक है
सोच तुमने छीनी थी
सुनना भयानकं विस्फोटों की घड़धड़ाती आवाजों ने
तुम्हारी दीक्षा, तुम्हारे निर्देशों की
पहुंच से परे हो रहे हैं
जिन्हें तुमने रचा था ।

●

क्षण

1

।। चार।। वे क्षण कम कठिन नहीं हैं
जिन्हें भोगते
मन के सारे असमंजस के बावजूद
सहज दिखने की
तुम्हारी ईमानदार कोशिश में
तुम्हारा विवेक तुम्हारे साथ हो
वे क्षण कठिन और भयावह दोनों
जिनका अस्वीकार
तुम्हारे मन । तुम्हारी मेधा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों का सरोकार हो
पर असहमती की
मुखर उद्घोषण के सारे रास्ते
तुम्हारी अपनी वजह से
बन्द हो गये हो

2

असहनीय कुछ
रोज रोज झेलने
नहीं झेलने की बात
उतनी महत्वपूर्ण नहीं है
एक क्षण भी
गड़ा रह जाता है
छाती पर
कई कई मौसमों के
आंधी पानी के बाद भी
जैसे कब्रों पर
इबारतें खुदी रह जाती हैं ।

●

सुनामी कल आज और कल

।। पांच।। चटटान पर अकेले बैठे मनु
भव्य दिखते हैं
नहीं दिखते उनके आसपास
बहते / डूबते / उतराते
चिल्लाते और चुप होते लोग
एक के बच जाने
और असंख्य के नहीं रह जाने पर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरल सा गणित
कि जल कर कोयला भई न राख
जिन मनोभूमियों पर
आस्थाएं और मान्यताए
उन्हीं के लिए
पश्चाताप अदृश्य का
पारावार होकर उपस्थिति हुआ
वहन करने को योगक्षेम
वही फिर घटा
मेरे काल मेरे स्थान की परिधि में
छोड़ गया औधे मुंह गिरे
जानवर / आदमी / पेड़ / मकान
लाचारगी जिन्दा बचे हुओं की
सड़ान्ध मुर्दा शरीरों की
दुःख और जुगुप्सा के
चिपचिपे अंधेरे में
बहती धार सा कौन्ध गया एक सच
प्रतिशोध लेती है प्रकृति
अपने साथ हो रहे पर
बिफरती है इसी तरह
महसूस किया तुमने
आत्मसात किया मैंने भी
पहले ही की तरह
किया कुछ भी न तुमने
न मैंने
आज की दारूण भयावहता भी
आगत की साफ–चमकीली
सुरक्षित आराम गाहों की
सपाट दीवार पर टंगी तस्वीर होगी
जिसे देखते नहीं टूटेगा भीतर कुछ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे नहीं दरकता
देखते अतीत को
सन्दर्भ दुःख के
सरोकार के भी
वर्तमान पर उपजते हैं
वर्तमान पर खत्म हो जाते हैं
अतीत से बिना कुछ लिए
भविष्य को बिना कुछ दिये ।

●

मेरी माँ

// छः // बरामदे के बाईं और कोने में
जहां सुबह सब से पहले पहुंचती धूप
बैठती थी अम्मा
फर्श से जरा भर ऊंचे
कम्बल–चादर बिछे तख्त पर
दोपहर में चौका–बर्तन निबटा कर
उनके सामने बिछी चटाई पर
आ बैठती
कन्हाई की
सुमेर की
इसकी / उसकी बहू
या ससुराल से आई किसी की बेटी
फंदे पर फंदा डालती / उल्टाती
पलभर में ढा देती ऊंचे पहाड़
बातों–बातों में उछाल देती
नीची घाटियां अम्बर तक ....
सरसों का तेल सेंक लाती घर की लड़की
तो बहु अक्सर ही कन्हाई की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालों की जड़ों से छुआती
ज्यूं दहलीज पर रखती फूल
पूजा–अर्चना करती सी
माथा–कनपटियां सहलाती
चोटी बना देती
कोई लाती चावल के आटे की
मीठी रोटियां
कच्चे आम की खटटी चटनी
कभी अभिमंत्रित काले धागे की डोरी
कि तत्ती हवा न लगे .....
झुरियों की गहराई से निकल
मुंह से झरते मोती
कि नुस्खे
तन–मन तनी प्रत्यंचा समान
साधे रखने में सक्षम .....
सोचती हूं अम्मा मेरे जितनी ही
उनकी भी थी
कितनों के हिस्से में
पर हर एक के लिए
समूची समग्र सहस्त्र सहस्त्रबाहु
वरद्हस्त .....

●

227, श्यामनगर,
धर्मशाला 176215 (हि.प्र.)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रभा मुजुमदार

मै एक उपनिवेश

।। एक ।। मैं एक व्यक्ति के रूप में
सबसे छोटा उपनिवेश हूँ.
मेरी हर सांस, हर शब्द, हर सोच
किसी न किसी का विज्ञापन.
कितनी ही तख्तियां
बैनर, पर्चे, इबारतें
जड़ी हुई हैं मुझ पर.
कितने ही लाउड्स्पीकर
मेरी जुबान से चिपके हुए
एक साथ कई कई दिशाओं में
शोर मचाते हुए ...
किसकी सोच, किसके षडयंत्र
किस किस के मुद्दे और अजेंडे
छाये हुए, जकड़े हुए
मेरे बंजर मस्तिष्क के भीतर.
किसी की हंसी
किसी की रुलाई
गम औरर खुशी,
सम्वेदनाएं आ आ आकर गुजरती हैं
बादलों की तरह.
मेरी जमीन
न मालूम कितनों की दासी है
मेरा आसमान
कब से बन्धक है
और मेरे पंख गिरवी..
नहीं किसी सहानुभूति की दरकार
टूकड़ों में बेचा है खुद अपने को
बोली लगा लग कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज भी मोल भाव के लिये तत्पर
बेशक जीवन से खारिज
रद्द और बेदखल
बे चेहरे का साया.
आईने में अपना प्रतिबिम्ब
धुन्धला कर मिट गया है
गड्ड मड्ड होते
अनेक सायों के बीच.

●

मै एक उपनिवेश

// दो // सत्ता के किसी
सूर्य के इर्दगिर्द
परिक्रमा करने रहने से
मिलती तो है
टुकड़े टुकड़े रोशनी
जीवन का वरदान
दूसरे गुरूत्वाकर्षणो से सुरक्षा.
मगर पड़ती भी रहेगी
यदा कदा
ग्रहणों की काली छाया.
बदलते रहेंगे
मन के मौसम
सूरज के अनुबन्धों और
शर्तो के साथ.
सहना होगा अनचाहे
परजीवियों का सान्निध्य.
कुछ अधिक पा सकने की
जारी रहेगी प्रतियोगिता.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्ष में स्थापित होकर
संतुलन बना रख पाने की.
फिर भी पहचाना जायेगा मुझे
सम्मानित सौर परिवार के सदस्य की तरह.
अंतरिक्ष में आवारा भटकते
पिंडों की बनस्पित
बुरा तो नहीं ग्रह–उपग्रह बन जीना

●

प्रभा मुजुमदार
मो.– 09969221570

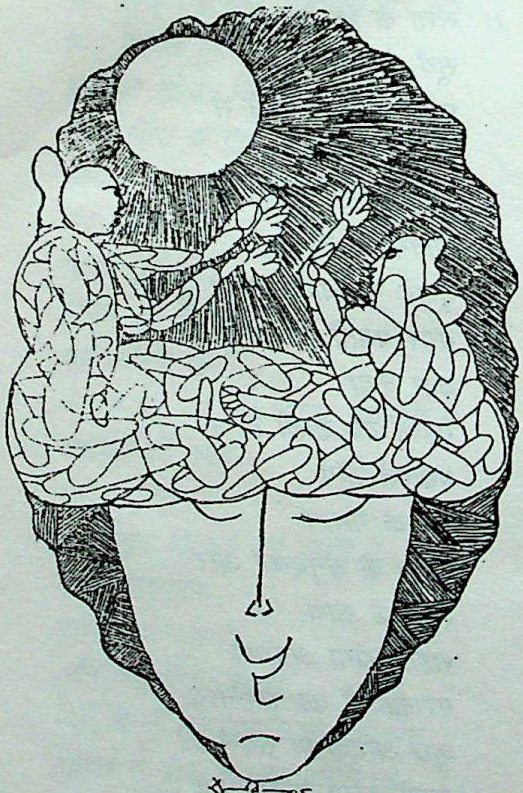

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महेश अग्रवाल की ग़ज़लें

।। एक।। जब हमें उस पार जाना भी जरूरी है
तो नदी पर पुल बनाना भी जरूरी है

कुछ कठिन लम्हे सफर में साथ हैं लेकिन
कुछ हँसी पल याद आना भी जरूरी है

फूल, फल, पत्ते सभी कुछ है दरख्तों पर
पंछियों का चहचहाना भी जरूरी है

कह कहों से कोठियाँ गूँजें भले लेकिन
झोपड़ी का मुस्कुराना भी जरूरी है

द्वार खुशियों के भले ही बन्द हों, लेकिन
रोज़ उनको खटखटाना भी जरूरी है

और कितना हौसंला है हौसलों में अब
हौसलों को आज़माना भी जरूरी है

सीप में रख तो लिये हैं अश्क दुनिया के
अब उन्हें मोती बनाना भी जरूरी है

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

।।दो।। खूबसूरत हर डगर हो यह जरूरी तो नहीं
मंजिलों तक रह गुजर हो यह जरूरी तो नहीं

प्यास का दर – दर भटकना प्यास की मजबूरियाँ
प्यास के घर तक नहर हो यह जरूरी तो नहीं

रात भर यह रात तानाशाह लगती है, मगर
वक्त से पहले सहर हो यह जरूरी तो नहीं

आग जिसने भी लगाई किस तरह ढूँढें उसे
शक्ल से वो दोपहर हो यह जरूरी तो नहीं

और भी कितने तरीके कत्ल के आते उसे
जेब में उसके ज़हर हो यह जरूरी तो नहीं

कोशिशों की कोख में ही कामयाबी है मगर
बीज़ पौधे से शजर हो यह जरूरी तो नहीं

जिन्दगी छोटी भले हो, खूबसूरत हो मगर
सौ बरस की ही उमर हो यह जरूरी तो नहीं

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

।। तीन।। है अभी इन्सानियत ये सरज़मीं बंजर नहीं
फूल भी हैं हर किसी के हाथ में पत्थर नहीं

उम्र काटी एक चुल्लू भर खुशी की चाह में
ख्वाहिशों में आज भी दरिया नहीं सागर नहीं

जिन्दगी है हमसफर तो मौत भी परछाई है
बस यही अहसास है तो फिर किसी का डर नहीं

वक्त की सच्चाई को खुद तौलना भी सीख तू
आँख देखी या कि कानो से कमी सुनकर नहीं

गल्तियाँ कैसे नहीं होंगी किसी से दोस्तो
सिर्फ वो इन्सान ही है कोई पैगम्बर नहीं

हम खड़े तो कर रहे है रोज सुविधा के महल
पर अभी अनगिन सिरों पर फूस के छप्पर नहीं

यूँ मुहब्बत से बड़ा तोहफा नहीं कोई यहाँ
और दिल जैसा कहीं भी दूसरा दिलवर नहीं

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

।। चार।। आसमां को इस जमीं के पास लाने के लिये
चल पड़े कुछ लोग खुद को आज़माने के लिये

उम्र का अहसास क्या बस हौसला ही चाहिये
पत्थरों पर फूल की फसलें उगाने के लिये

तू फफोले मत बना इन्सानियत के जिस्म पर
आग रहने दे फकत चूल्हा जलाने के लिये

दर्द के अनगिन समुन्दर पार जब करना पड़े
तब कहीं अवसर मिला है मुस्कुराने के लिये

नाखुदा पर कश्तियों पर ही भरोसा मत करो
तैरना भी सीख तू खुद को बचाने के लिये

रोज़ मरती है हमारी, आपकी संवेदना
चार काँधे भी नहीं मिलते उठाने के लिये

जिन्दगी है इक खिलौना और वो भी काँच का
यह खिलौना ही बना है टूट जाने के लिये

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

।। पाँच।। हम मौत से यह जिन्दगी मांगा नहीं करते
हम जुगनुओं से रोशनी मांगा नहीं करते

जो गम दिये तूने हिफाजत से रखो हमने
पर हम कभी गम से खुशी मांगा नहीं करते

ये हाथ फैलाना नहीं फितरत रही मेरी
हम चन्द लम्हो से सदी मांगा नहीं करते

कुछ भी नहीं है पास जिसके क्या मुझे देगा
हम प्यास से बहती नदी मांगा नहीं करते

लो हो गया हमको नशा इन रोटियों से भी
हम मयकदों से मयकशी मांगा नहीं करते

जिनको पता है रास्तों का और मंजिल का
वो रहबरों से रहबरी मांगा नहीं करते

यह जानते हैं हम इबादत फर्ज है अपना
पर हम खुदा से बन्दगी मांगा नहीं करते

●

संपर्क– 171, लक्ष्मी नगर
रायसेन रोड, भोपाल 462021
मोबा. 09229112607

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुकेश जैन

वे व्यापारी हैं

।। एक ।। वे व्यापारी हैं
वे खरीद लेते हैं
हमें और
हमें पता ही नहीं चलता

वे खरीद लेते हैं
गरीबी
दलितता
और करते हैं जादू
बदल लेते हैं वोटों में

एक वोट के बदले
वे देते है कई कई सपने
उन सपनों के भीतर भी
हम देखते हैं सपने

इस तरह कट जाती है रात स्याह और
सुबह हो ताजी है
सुबह वे फिर करते हैं जादू ।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने भैंस से कहा

// दो //

मैंने भैंस से कहा
भैंसा ने सुना
मैंने उन से भी कहा था
उनने भी सुना

जब मैंने कहा
भैंस कीचड़ में बैठी थी
और वे ऑफिस में

दोनों में समानता नहीं थी
भैंस ने कभी सियासत
नही की
उन्होंने कभी दूध नहीं दिया

वे भैंस को नहीं जानते थे
भैंस उन्हें नहीं जानती थी
भैंस पगुराती थी
वे पगुराते थे ।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसना मत

।। तीन ।। हंसना मना नहीं है
हंसो
जी भर के हंसो

उन्हें पता है
हँसना
तुम हँसना
तुम हँसोगे
तो फसोगे
वे पूछेंगे सवाल
उत्तर क्या दोगे ?

हँसना
उनके हिस्से में आता है
तुम्हारे हिस्से में क्या
तुम्हें पता है ?

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके हाथों में नहीं

// चार // उनके हाथों में नहीं
थी बन्दूक
वे नहीं चलते थे
घोड़े पर
उनके नाम खून
भी दर्ज नहीं था ।

हमें दिखती थीं
उनके हाथों में
कई, कई बंदूकें
चलती हुई,
घोड़ों की नालें
कुचलती हुई
सीनों को

उनके नाम कोई खून दर्ज
नहीं था ।

कोई नही मरा
उनकी बन्दूकों से
नालों से
खून दर्ज नहीं हुआ
कभी ।

●

सब्जी मंडी, गढ़ाकोटा
सागर (म.प्र.)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नितिन जैन

ग़ज़ल

।। एक ।। अच्छी खबर कोई छपी है आज के अखबार में
या देश की दुर्गत लिखी है आज के अखबार में ।

बेटा कलंकित कर दिया क्यूं आज तूने कोख को
इक माँ बेचारी रो रही है है आज के अखबार में ।

दंगे घोटालों ने जगह ली आजकल मुख पृष्ठ पर
कार्टून में बस आदमी है आज के अखबार में ।

जो कल तलक ये कह रहे थे नाम में क्या रखा
उनकी कलर फोटो छपी है आज के अखबार में ।

हर पेज पर विज्ञापनों की भीड़ इतनी हो गई
सम्पादकीय सूनी पड़ी है आज के अखबार में ।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।। दो ।। गीत पतझड़ हुए आजकल गांव में
सहमी सहमी सी बैठी ग़ज़ल गांव में ।

कोई फनकार तस्वीर पूरी करो
हर तरफ है अधूरी शकल गांव में ।

सुरमयी शाम सरगम न बहती कहीं
दास्ताँ कह रहे बूढ़े हल गांव में ।

अब तो पहचान अपनी ही खोन लगी
इतने मिलने लगे हमशकल गांव में ।।

अपने आंगन में थोड़ी सी मिटटी रखो
देने आए शहर फिर दखल गांव में ।

आ गये दूर लेकिन ख्वाहिश यही
फिर से पैदा हो बन के फसल गांव में ।

●

।। तीन ।। न चिट्ठी न पाती न खत का जमाना
कहां रह गया अब कहीं आना जाना ।

उड़े हैं परिन्दे तो उड़ने ही दीजे
वहीं जा रहे हैं जहां आबो दाना ।

ये बंदूक कांधे पे जिसके रखी है
शिकारी का वो ही है अगला निशाना ।

महल खंडहर में हुई बात ऐसी
न तू है न मैं हूं समय है बिताना ।

ये दुनिया तो छोटी बहुत हो चली पर
पड़ौसी ही लगता है अपना अजाना ।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।। चार।। अनुबंध के पैबंद कपड़ों में लगे दिखते रहे ।
यूं साल गुजरा उम्र गुजरी और हम तकते रहे ।

था एक ही चेहरा मगर किरदार थे उसमें कई
पल एक में बदलकर वेश वो मिलते रहे छलते रहे ।

ता उम्र जो लड़ते रहे है आम जन के सामने
वो रात को पर एक ही मय खाने में मिलते रहे ।

अब रोटियां दो वक्त की सबको मिलेगी देखना
पथरीली आंखों में सुनहरे स्वप्न ही पलते रहे ।

डर नफरतों से जूझता इतिहास जिसने भी लिखा
इक प्रेम की स्याही से हम सांरा जहां लिखते रहे ।।

●

संपर्क – निखिल ट्रेडर्स
शनीचरा बाजार, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जनार्दन मिश्र

माया मिली न राम

// एक // मुझे माया मिली न राम
मुझे कही छाया मिली
न विश्राम

अटकन–भटकन रहा जीवन में
मुझे हर जगह हार ही मिली
कुंठा, संत्रास से जकड़ा रहा मेरा
मन

मुझे माया मिली
न राम

मंदिर गया, मसजिद गया
गुरुनानक देव को भेजा
पर, कहीं नहीं जगी कोई
आस
हर ओर थका मेरा विश्वास

अपना सिर धुना
अपना पैर पटका
अपना गुस्सा खुद
अपने पर निकाला
पर, कोई हल नहीं
निकला

हमने लाख–लाख चाहा
पर, मुझे माया मिली
न राम .... /

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुनाहगार

।। दो ।। हाथों में रस्से
और पैरों मे जंजीर बांधकर
उन्होने मुझे गुनाहगार बना दिया है
मैं चुप
अपने को समेटता
भीड़ को चीरता बढ़ रहा हूं
जाने–पहचाने अनजान बन
गुजर रहे हैं रास्ते से
क्या कहूं किससे
कौन सुनेगा
सिर्फ मेरा अनुत्तरित प्रश्न
अपना सिर धुनेगा
विकराल छायायें मुझे घेरती जा रही हैं
वे गिरफ्त को और मतबूत कर
हाथ में रस्सों को थामे
बढ़ रहे हैं
और मैं साथ दे रहा हूं
पर कब तक और कहां तक
मित्रो !
अब आप ही बताईए .... ।

●

संकटमोचन नगर
नई पुलिस लाइन
आरा–802301
मोबाइल 09334295007

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पद्मनाभ गौतम

प्रेम 1

चलते जाना निरंतर
चुनकर अपने अपने
हिस्से की धरती
एक दूसरे के विपरीत
और फ़िर आ खड़े होना
आमने-सामने
उन्हीं चेहरों का
नापकर
अपने अपने
हिस्से का गोलार्द्ध

वे जो होते है
एक दूसरे के विपरीत
वही हो जाते हैं एक दिन
सम्मुख
और तब मिलते हैं
उनके अस्तित्व
एक दूसरे में धंसे गुथे
ठीक उसी तरह
कि जैसे रख दिए गए हों
दो आईने
आमने-सामने
कि जैसे रंगत में
एक दूसरे से
जुदा किरनें
एक होकर

दिसं.13 जनवरी 2014

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बन जाती है
सूरज की सफेदी

हमारी अलग–अलग
रंगों की सोच के बावजूद
हमारा प्रेम भी तो है
सूरज की रौशनी सा
सफेद ।

●

प्रेम 2

जहाँ ढूँढते रहे थे हम उसे
वहाँ नहीं था प्रेम
तलाशते रहे हम उसे
अभिव्यक्तियों में
और वह मुस्कुरा रहा था
हमारे मौन में
प्रेम था निःशब्द,
हमारे मौन में था प्रेम

तलाशते रहे हम उसे जड़ों में
उस वृक्ष की,
रोपा था जिसे एक साथ
और होता रहा वह
पत्तियों की देह से
हवाओं में विलीन
श्वांस बनकर देह में
धुल रहा था प्रेम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमने समझा
होगा उत्स्रुत वह किसी बिन्दु से
पर झरता रहा वह
ओस कणों सा आकाश से
भिगोता रहा मन और देह को खामोश
आकाश के फैलाव में था प्रेम

छिपा नहीं था वह देह के रहस्यों में
अपितु भेदा था उसने देह का व्यूह
जब ढूंढ रहे थे उसे कहीं अपने बीच
हमें अपने वजूद में भिगोए हुए था प्रेम
प्रेम में डूबी हुई थी दो आत्माएँ
दो आत्माओं के बीच नहीं था प्रेम

हम चाहते थे उसे आँकना
लंबाई चौड़ाई और गहराई के
मनुपात में
और वह था अनंत
पर जिस समय था वह अनंत
ठीक उसी समय
शून्य भी तो था प्रेम

अनंत में शून्य था प्रेम
शून्य में अनंत था प्रेम

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जगत रास

।। तीन ।। मुँह अंधेरे उठती है वह
और उसके पैरों की आहट से
हड़बड़ाकर कर जागा
कलगीदार मुर्गा
बाँग दे कर बन जाता है
सूरज का झंडाबरदार

तेज तेज डग भरकर आता सूरज
हार जाता है हर रोज
उससे पहले नहा लेने की होड़ में

झाड़ू की गुदगुदी से कुनमुनाकर
जागती अलसाई धरती को
फँसाकर अपनी उँगलियों में
घुमाती है वह किसी लट्टू सा
और इस तरह हो जाता है शुरू
आंगन की छोटी सी दुनिया का
एक और दिन

चल पड़ती है वह इसके बाद
खींचने खेतों के कान
और रंगने लोअर मार्केट को
ताही पत्ते की हरियाली से

मापता है समय
उसके चलने से अपनी गति
और उसके रूकने पर
सुस्ताती है घड़ी की सुईयाँ भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बीच बाट जोह रहे होते हैं
उसकी वापसी की
एक उदास बांगघर
स्कूल से लौटे बच्चे
और निकम्मे पत्तेबाजों की
महफिल

दिन ढले घर पहुँचकर
गिराती है वह खिड़कियों के परदे
और तब उसकी लालटेन जलाती
दियासलाई के इशारे पर
आंख खोलता है
सांझ का पहला तारा

थक कर उसके
आंख मूंद लेने पर
और गहरा जाती है रात
और पास बहती सोम्बू की गति
हो जाती है कुछ और मंथर

आखिरकार
वह सो जाती है
इस बात से कतई बेपरवाह
कि उसके ही जादू से
बला है यह
रात दिन का जगत रास ।

●

संपर्क : द्वारा–
इन्द्रावती मिश्रा हाई स्कूल के पास
पो/बैकुंठपुर जिला कोरिया
पिन 497335

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी

लक्ष्यहीन है मानव कितना

।। एक।। भौतिकवादी इस अन्धड़ में,
भटक–भटक कर राही चलता।
अन्तहीन इच्छाओं का बन,
नीरवतामय! प्रतिपल छलता।
शासित अब तक होता आया,
नित्य दीन है मानव कितना।

केवल तन की चरम तृप्ति में,
अपने को ही भूल गया है।
द्वन्द ग्रस्त! हारा हारा–सा,
जिसको हर पल शूल नया है।
सागर में रहकर भी बाहर,
मीन तुल्य है मानव कितना।

दूर घाटियों से गुंजित है,
शीतल अंचल की पुकार वह।
सुन कर भी अनसुने बने हैं,
श्वांस तभी बन गई भार यह।
बाहर दीप जलाये जितने,
अन्धकारमय मानव उतना।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शूल हार मुझको पहनाओ

।। दो ।। मैं तो सहने की आदी हूँ,
नहीं कभी बच कर भागी हूँ,
फूल–फूल सारे चुन कर के,
पतझड़ से मुझको हर्षाओ।

चल स्वप्नों की चाह न मुझको,
वंचित रहकर दाह न मुझको,
राह बनाऊँ नव–नव मोदित,
वाधा का उपहार दिलाओ।

नहीं किसी को कभी पुकारूं,
विश्वासों के दीप जलाऊँ,
पहचानूं आलोक हृदय का
सघन निशा का रूप वसाओ।

हँसना तो प्रसून की गाथा,
म्लानित झुका अन्ततः माथा,
वासन्ती ऋतु रहे प्रफुल्लित,
मेघों को नयनों में लाओ।

भय का भाव नहीं उर लाये,
अन्तरिक्ष सा जो विकसाये,
बने चन्दनी जीवन मेरा,
व्यालों को आकर लिपटाओ।

अन्यायों के इस घेरे में,
मायावी के इस फेरे में,
पहचानूं जो खोया अब तक,
रंगों की माया सरसाओ।

जो चिरमीत उसे ही पाँऊ,
सागर में अवलम्ब बनाऊँ,
समझूँ मैं मारीचि कौन है,
छद्मवेष धर यहाँ दिखाओ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यों ही यह दिन बीत गया

।। तीन ।। काम नहीं कोई हो पाया,
आशाओं का दीप जलाया,
लक्ष्यहीन बन व्यस्त रहे,
ऐसे ही घट यह रीत गया।

प्रतिदिन की है यही कहानी,
नहीं किसी को रही अजानी,
अनजाने में ही चिरपरिचित,
द्वारों से वह मीत गया।

इच्छाओं के विहग अपरिमित,
मन का नभ भी रहा असीमित,
निशि छाई धीरे–धीरे फिर,,
गा पाये कब गीत नया।

समझ रहे थे जो मन चाहा,
वही अन्ततः है अनचाहा,
हार गया सर्वस्व यहां वह;
जो न काल को जीत गया।

जब से उस अपूर्व को देखा,
चिर अनन्त का जाना लेखा,
कण–कण में संगीत देखकर,
भ्रम वाला वो गीत गाया।

●

संपर्क –
24 – आँचल कालोनी, श्यामगंज–बरेली 243005 (उ.प्र.)

 CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जया नर्गिस को हिन्दी सेवी सम्मान

चित्र में – महामहिम राज्यपाल (म.प्र.) माननीय श्री रामनरेश यादव जया नर्गिस को सम्मानित करते हुए।

भोपाल। साहित्य और कला विधाओं के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन में उत्कृष्ट योगदान पर मलयालम भाषी सुश्री जया नर्गिस को वर्ष 2013 का हिन्दी तर भाषी सेवी सम्मान से म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने अलंकृत किया। एक भव्य समारोह में म.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री रामनरेश यादव के हाथों यह सम्मान जया नर्गिस को प्रदान किया गया।

जया नर्गिस ने हिन्दी और उर्दू लेखन के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, आप कविता, ग़ज़ल, कहानी, उपन्यास, बाल एवं महिला लेखन में दक्षता रखती हैं और अब तक आपकी एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। एक उपन्यास शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। स्कूली पाठ्यक्रमों में आपकी कहानियां सम्मिलित हैं। समस्त प्रतिष्ठित हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं लगभग 30 वर्षो से निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। कई संस्थानों से पुरस्कृत जया नर्गिस की कई रचनाओं पर शोधकार्य हुआ है। उनकी रचनाओं का गुजराती, पंजाबी और अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है। आप एक कुशल संगीतज्ञ एवं गायिका भी हैं और दीर्घकाल तक आकाशवाणी, दूरदर्शन से अपनी कला प्रदर्शित करती रही हैं। वर्तमान में भोपाल में राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में संगीत निर्देशक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहीं हैं।

स्मरणीय है, जया नर्गिस की ग़ज़लों पर केन्द्रित 'आकंठ' का एक विशेषांक भी प्रकाशित हो चुका है।

संपादक .....

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जया नर्गिस की ग़ज़लें

।। एक।। किसी पे शक़ भी नहीं, कोई मोअतबर भी नहीं
न फ़िक्रे – ज़िंदगी है और अजल का डर भी नहीं

न कोई छूट रहा है जो मुड़के देखूं उसे
न आगे जाना है के कोई मुंतज़र भी नहीं

दुआएं माँ की मेरे साथ – साथ चलती हैं
मैं कैसे कह दूं भला कोई हमसफ़र भी नहीं

तमाम शह मेरे नाम हो गया लेकिन
जहां पनाह मिले ऐसा एक घर भी नहीं

सज़ा तो देता है मुझको मगर गुनाह मेरा
बता सके तो मुझे उसका ये जिगर भी नहीं

जो मेरे दिल में, निगाहों में बसा था 'नर्गिस'
ज़माना बीत गया उसकी कुछ ख़बर भी नहीं

●

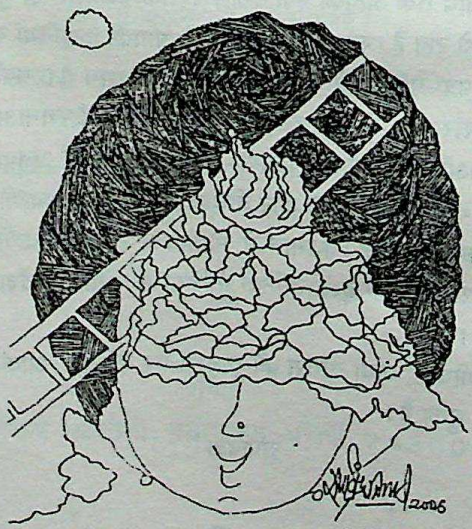

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।। दो ।। वो रू – ब – रू मेरे कुछ इस अदा से आए है
कोई ज्यूं आइने को आइना दिखाए है

तुम्हारी याद दोस्त बनके चली आती है
कभी जो दिल मेरा तन्हाई से घबराए है

वो एक लफ़्ज़ जो लब पर तेरे खिला था कभी
मेर जहान को वो आज भी महकाए है

कोई तो बात है आंसू छलकते हैं उसके
वो शख़्स जब भी किसी लम्हा मुस्कुराएं है

हमारी दूरियां हैं आज पूछती हमसे
ये रिश्ता टूटकर भी क्यूं न टूट पाए है

पहेली हमसे न सुलझी ये उम्र – भर 'नर्गिस'
कोई क्यूं राहते – दिल बनके दिल दुखाए है

●

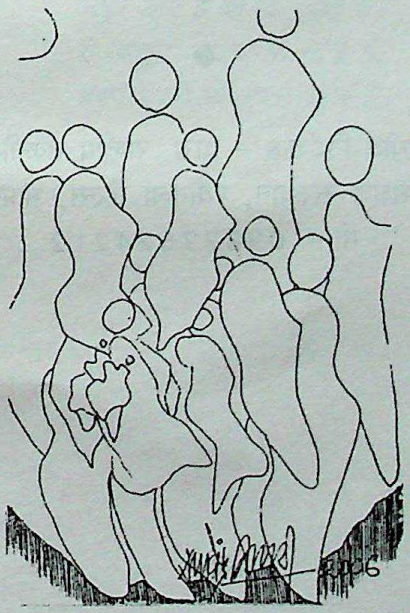

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।। तीन।। चेहरे रिश्तों के बदल जाते हैं हालात के साथ
अपने बेगानों में ढ़ल जाते हैं हालात के साथ

जो बसाते हैं बस्तियों को बड़ी मेहनत से
घर कभी उनके भी जल जाते हैं हालात के साथ

आए वो पास, नज़र चार हुई, हाथ मिले
हादसे ऐसे भी टल जाते हैं हालात के साथ

जिनको कुछ ख़ौफ़ नहीं राह की दुश्वारी का
गिरते – गिरते वो संभल जाते हैं हालात के साथ

है ग़रज़ चीज़ बड़ी इसके तमाशे हैं अजब
आके दुश्मन गले मिल जाते हैं हालात के साथ

ये जहां एक न इक दिन तेरा समझेगा हुनर
खोटे सिक्के भी जो चल जाते हैं हालात के साथ

इंतज़ार और ज़रा देर सब रख 'नर्गिस'
दिल के अरमान निकल जाते हैं हालांत के साथ

●

पता – संगीत निर्देशक – द्वारा, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षण
प्रशिक्षण संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल
मो.– 09827624212

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. मधुर नज़्मी

ग़ज़ल

।। एक ।। किस तरह के तेरे उजाले हैं,
ज़ेहन तक तीरगी के जाले हैं।
वक़्त के इनमें सब हवाले हैं,
दौरे – हाज़िर के जो रिसाले हैं।
तेज़तर धूप है ज़माने की,
मुतमइन फिर भी बर्फ़ वाले हैं।
आप की याद के चराग़ों से,
जिस्म से रूह तक उजाले हैं।
आईने हैं सफ़र की मुश्किल के,
पाँव में जो हमारे छाले हैं।
बख़्श देते हैं हुस्न मौसम को,
बादलों के करम निराले हैं।
आदमीयत को इससे क्या मतलब,
चेहरे गोरे हैं या कि काले हैं।
ऐ 'मधुर' शाइरी के साँचे में,
हमने फूलों के अक्स ढाले हैं।

●

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

।। दो ।। अपने हालात के बहाने से,
मैं मुख़ातिब हूँ इस ज़माने से।
हर तरफ़ राज है अँधेरे का,
एक सूरज के डूब जाने से।
आँख खुलते ही हो गये ग़ायब,
ख़्वाब आये थे जो सुहाने से।
बे सुकूनी गयी मलाल गया,
ऐ ग़ज़ल! तुमको गुनगुनाने से।
बाग़ में गुल खिला, कली बिखरी,
तेरे इकबार मुस्कराने से।
क्या कहूँ क्या लगा रखता हूँ,
मैं मुहब्बत के आस्ताने से।
चाक सीना हुआ अँधेरे का,
ऐ मेरे चाँद! तेरे आने से।
एक नुदरत है उनके लहजे में,
और अन्दाज़ हैं पुराने से।
उलझा–उलझा कबीर जैसा हूँ,
ज़िंदगानी के ताने–बाने से।
ऐ 'मधुर' दिल भी पाक होता है,
इल्म के नूर में नहाने से।

●

'काव्यमुखी साहित्य–अकादमी'
गोहना मुहम्मदाबाद, जिला–मऊ – 276403 (उ.प्र.)
मो.– 09369973494

 CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सजीवन मयंक

बे-सबब बात बढ़ती रही

बे–सबब बात बढ़ती रही ।
एक बस्ती उजड़ती रही ।।

एक लड़की बड़ी साहसी ।
सारी दुनियां से लड़ती रही ।।

नींव कमजोर थी इसलिए ।
छत बनी जो बिगड़ती रही ।।

आईने का नहीं दोष था ।
शक्ल अपनी बिगड़ती रही ।।

अपनी किस्मत ही कमजोर थी ।
ऐड़िया जो रगड़ती रही ।।

भागती जा रही जिंदगी ।
मौत उसको पकड़ती रही ।।

●

251, शनिचरा वार्ड–1,
नरसिंह गली, होशंगाबाद (म.प्र.)
फोन. 07574–252850, 9425043627

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16 दिसम्बर

वो अनाम थी। वो उड़ रही थी समय के परों पर। वो छू रही थी आकाश की ऊँचाइयाँ। उस दिन रात के अंधेरे में घुग्घुओं के एक गिरोह ने कतर दिये थे उसके पर। लेकिन वो वामा थी। बन गयी थी वामाग्नि। फीनिक्स की मानिंद जल गयी। राख से फिर जी उठी। एक प्रतीक बनकर। एक मडोना। एक आइकॉन। महा नगर के हर चौराहे पर मानो आज भी लटकी है उसकी अदृश्य प्रतिमा। हर अन्तर में समा गई वो। अपनी अस्मिता को बचाया। असाधारण मृत्यु को वरण किया। देश के इतिहास में बन गया एक निर्भयाकाण्ड। एक वॉटरशेड।

देश मे एक भूचाल आया। सुनामी उठी। महानगरों में जनसैलाब उमड़ा। समाज की अन्तरात्मा को झकझोरा। लोगों की तंद्रा टूटी। विशाल जनाक्रोश उमड़ा। नया मोड़ आया। जनमानस को सदमा लगा। फैल गयी नयी लहर, नयी जागृति। युवा पीढ़ी जागी। वो मृत्यु से साक्षात्कार कर रही थी। बारह दिन तक जूझी। कोमा में रही। वो बन गयी एक मिथक। एक लेजेण्ड। स्त्री जाति का आइकॉन। वर्तमान के इस अभ्यारण्य में आज भी वो भेड़िये घूम रहे हैं मानव भेष में।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर वॉशिगंटन की टाइम मैग्जीन पत्रिका ने इस काण्ड को विश्व की टॉप दस जघन्य घटनाओं में शुमार किया। इसे 'इंडियाज रेप एपिडेमिक' घोषित किया। समाज में एक अमिट निशान बन गया।1 6 दिसम्बर की वो त्रासदी। एक ज्वलंत काण्ड। झुलसती अस्मिता। फूटता जनाक्रोश दामिनी काण्ड का।

लेकिन ऐसे काण्ड बंद नहीं हुए/सिलसिला जारी है/काण्ड पर काण्ड आ रहे हैं। तहलका पर तहलका हो रहा है। सीमाओं का अतिक्रमण हो रहा है। महिलाओं ने भी अपनी लक्ष्मण रेखा लाँघकर उन रावणों के चंगुल से छूटने की कवायद कर ली है। लोग भले ही उँगली उठावें। हवा का रूख बदल रहा है। पीड़िता के लिए न्याय की पुकारें आ रहीं हैं। उत्पीड़न के खिलाफ आवाजें उठ रहीं हैं। समाज में व्याप्त इस प्रदूषित मानसिकता का परिमार्जन करना है। काण्डों का ऑपरेशन चल रहा है। संतों के पाखंडों का भंडाफोड़ हो रहा है। संत कठघरे में हैं। यह कैसा समाज! यह कैसा न्याय! समाज में कितना मानसिक प्रदूषण भरा है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16 दिसम्बर की इस जघन्य त्रासदी के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका में निर्भया को मरणोपरान्त बहादुरी के पुरस्कार से नवाजा गया। भारत सरकार ने 1000 करोड़ रूपये की राशि से महिला सुरक्षा के लिए निर्भया फंड की स्थापना की। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सचिव 'जॉनकेरी' निर्भया के दृढ़ संकल्प एवं अदम्य साहस से प्रेरित हुए। इस जघन्य त्रासदी को लेकर पूर्णा जगन्नाथन ने लंदन में निर्भया नाटक का मंचन किया। सफल प्रयास रहा। भारत में भी इसकी प्रस्तुति होगी।

●

प्रस्तुति
एम.एस.पटैल
अशोक वार्ड, पिपरिया (म.प्र.) 461775

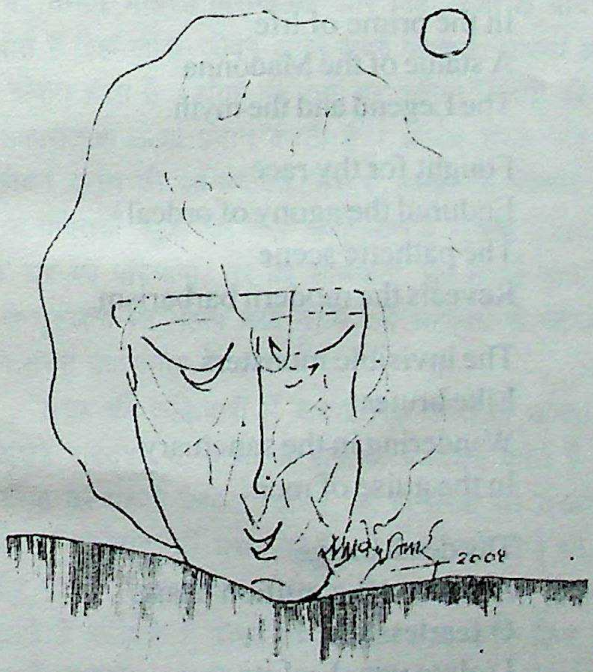

by - M.S. Patel

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16 December : A Portrait

O lady of the fire !
What shall I call you ?
Just Nirbhaya or Damini
No further details.

Flying on the wings of time
Like phoenix
Burnt at this altar
At this juncture.

Rising from thy ashes
Depicted the icon
Emblem of womanhood
Born again and again.

Raised a monument
In the prime of life
A statue of the Madonna
The Legend and the myth.

Fought for thy race
Endured the agony of ordeal
The pathetic scene
Reveals the modern barbarism.

The invisible monsters
Like brutes
Wandering in the sanctuary
In the guise of men.

Thy death pangs
Agonized the million hearts
O fearless one !
I salute you, I salute you.

●

 CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा

'आकाश की देह पर ' सकारात्मक सोच की कविताएं

- डां. सविता मिश्र

'आकाश की देह पर' की कविताएं प्रखर मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत कविताएं हैं । कसावटपूर्ण शिप्ल में विचार और संवेदन से संश्लिष्ट मनु स्वामी की ये कविताएं पाठकों के अन्दर कौंधती रहती हैं । यथार्थ की जटिलता, लोक जीवन की अभिव्यक्ति, जीवन–राग के जीवंत चित्र इन कविताओं का वैशिष्ट्य है ।

इन कविताओं में बिना पैराशूट के भीतर तक आई पतंग उड़ाते बच्चे की हँसी है, 'आकाश' के घोसले से मन की धरती पर चिड़िया की तरह फुदकते सपने हैं जो जीवन के कैनवा पर रंग भरते देते हैं । हँसी का भीतर उतरना, जीवन को रंगों से भर देना 'ट्रेन' कविता में ट्रेन के डिब्बों का गली मोहल्लों की तरह बतियाना, क्रवि की सकारात्मक सोच का परिचायक है । ये कविताएं दर्शाती हैं कि मनुस्वामी जीवन से प्रेम करने वाले कवि हैं । वर्तमान परिवेश को तमाम भयावह विसंगतियों और विद्रुपताओं के बीच पाठकों को वहाँ लेजाते हैं जहाँ लोक–जीवन अपने समग्र सौन्दर्य, आस्था और विश्वास से साथ झंकृत होता है । संग्रह की प्रायः हर कविता जिंदगी की उल्लास से भरकर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है । अत्यंत सरल–सहज शब्दों में उदास जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति 'ईश्वर' कविता में मिलती है । कविता की अन्तिम पंक्तियाँ 'पूजा घर में / यथास्थान है / देवी–देवता/बस/ईवश्र नहीं है ।' घर की परिभाषा, घर की सार्थकता, घर में माँ–बाऊजी के साथ अन्य सभी गृहजनों का महत्व कवि ने जितनी सहजता से अभिव्यक्त किया है, वह निःसंदेह प्रशंसनीय है ।

संग्रह की कविताओं में सकारात्मक ऊर्जा के उल्कापिण्ड है जो वर्तमान अंधेरे परिदृश्य में पाठकों के मन को प्रकाशित करते हैं । उदाहरण के लिए संग्रह की पहली कविता 'दोस्त' को ही लिया जा सकता है । कवि के लिए दोस्त 'कोहिनूर' की तरह होते हैं, गंगा में तैरते दीपों की तरह पवित्र होते हैं और इससे भी बढ़कर– 'ईश्वरीय देन होते हैं ये / जिनकी सोहवत को / तरसते हैं फरिश्ते ।' दोस्त का एस.एम.एस. उनके लिए 'कोहरे' की हटाकर धरती गुनगुनी धूप की तरह होता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यवस्थागत विसंगतियाँ कवि को आहत करती हैं । 'दावत' कविता में वे एक ओर मांगलिक कार्यक्रम में ढोल पर थिरकते आँखों से संवाद करते लड़के/लड़कियों का चित्र उकेरते हैं और दूसरी ओर खाने की मेज तक, कनात के पीछे से पहुंचे बच्चे को गालियों के साथ, कॉलर पकड़कर फेंक देने का ... । समकालीन ज्वलंत समस्याओं से वे पाठकों को रूबरू कराते हैं, पर उनकी कविताओं में कोई बौद्धिक आतंक नहीं होता । वे बड़े ही सहज भाव से कहते हैं –

'बसंत भी / लौट रहा है / क्या पहाड़ भेजेंगे / ठण्डी हवा / वे तो खुद तप रहे हैं / नंगे होकर ।' कवि की संवेदना कभी वरिष्ठ साहित्यकार 'तुलसी नीलकंठ' के साथ हो लेती है तो कभी 'सरहद–सियासत–मजहब के झगड़ों से दूर' वाहिद मियाँ के साथ.... और उनको कलम बड़ी ही आत्मीय ऊष्मा से स्पंदित होकर दोनों के चित्र खींच डालती हैं । बाजारवाद के इस दौर में जीवन का, प्रकृति का सौन्दर्य अत्यंत सर्जनात्मक रूप में व्यक्त किया है कवि ने । इनकी कविताओं में चाँदनी ओढ़े, गलबहियां करते पेड़ हैं, आँख मिचौली खेलते नक्षत्र हैं, टकटकी लगाकर देखते गिलहरी है, आकाशगंगा के किनारे ठिठका सूरज है । शाम का बहुत सुन्दर बिम्ब है 'एक शाम' कविता में – 'आकाश की देह पर / उलट गया है / कलरपॉट । कुल मिलाकर भूमंडलीकरण के इस दौर में मनु स्वामी की कविताएं आश्वस्त करती हैं । इनमें एक और वर्तमान समय से उत्पन्न चिंताएं हैं, मुठभेड़ है, दूसरी और सकारात्मक सोच है जो जिन्दगी को खूबसूरत बनाये रखने का हौंसला देती है ।

●

212/10, साहित्य बिहार
बिजनौर (उ.प्र.)
मो. 9719659317

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा

'सारथी मैं हूँ' – ग़ज़ल का नया अंदाज

– शिवकुमार अर्चन

'सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम' कविता की इस परिभाषा के सबसे नज़दीक और सटीक भारतीय काव्य परिदृश्य पर मौजूद विधाओं में ग़ज़ल और दोहा ही है। ग़ज़ल की बात करते समय हमें ग़ज़ल की एक हजार वर्ष से भी ज्यादा लंबी परंपरा याद आती है। उसका इतिहास याद आता है। हिन्दुस्तान में उसकी आमद और परवरिश याद आती है साथ ही याद आते हैं वो शाइर जिन्होंने ग़ज़ल का सर बलंद किया, उसके दामन में सलमे सितारे जड़े। ग़ज़ल की तर्जेबयानी, कम शब्दों में बात कहने का सलीका, उसका मिजाज, मुहावरेदानी ने सदियों से पाठक और श्रोता को अपने असर में रखा है। और यही कारण है कि ग़ज़ल आज भी प्रासंगिक, प्रगतिशील विधा है। ग़मे जानां से ग़मे दौरां के तबील सफर में देश, कालं, परिस्थति के अनुसार ग़ज़ल में भी, कथ्य, शिल्प भाषा, मुहावरे, बिंबात्मकता के स्तर पर बदलाव आए, जो आज की ग़ज़ल में साफ नज़र आते हैं। दुष्यंत को हम तथाकथित हिन्दी ग़ज़ल का प्रस्थान बिन्दु कह सकते हैं। संभवतः दुष्यंत हिन्दी के ऐसे पहले ग़ज़लकार है जिन्होंने ग़ज़ल की पारंपारिक जमीन को तोड़ा और उसमें अपनी भाषा के मुहावरे, नए कथ्य, नए बिम्ब तथा सामाजिक, राजनैतिक सरोकारों के नए फूल खिलाकर ग़ज़ल को नया रंग रूप दिया। उनकी तर्जे बयानी और मकबूलियत से प्रभावित होकर हिन्दी के कई रचनाकार ग़ज़ल की ओर आकर्षित हुए। उनकी कोशिशों और संघर्ष का मूल्यांकन होना ही चाहिए।

किशन तिवारी इसी परंपरा के संवाहक ग़ज़लकार हैं। 'सारथी मैं हूँ' उनका पांचवा ग़ज़ल संग्रह है इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि वे ग़ज़ल से क़ैसी और कितनी मुहोब्बत रखते हैं। उनका पहला ग़ज़ल संग्रह 1986 में 'भूख से घबराकर' प्रकाशित हुआ था तब से लेकर अब तक ग़ज़ल की राह में उनका मुसलसल सफर जारी है। ग़ज़ल संग्रह के शीर्षक 'सारथी मैं हूँ' को पढ़कर तथा इस संग्रह की ग़ज़लों में उतरकर मेरे मन मस्तिष्क में एक बिंब उभर कर आया– ग़ज़ल का रथ है जिसमें पारंपरिक और आधुनिकता के घोड़े जुते हुए हैं। किशन तिवारी इसके सारथी है, और ग़ज़ल के इस रथ पर सवार हैं। मानवीय संवेदनाएं, समय की सच्चाइयां, गहन अनुभूतियां, जीवनानुभव, व्याप्त विसंगतियां और प्रेम की नैसर्गिकता। संग्रह की ग़ज़लें मान्य माध्यमों के द्वारा अभिव्यक्त हुई हैं। जैसे मैं, तुम, वह और अन्य। 'मैं' याने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचनाकार, उसका स्वाभिमान, उसके संघर्ष, उसके मूल्य, जीवनानुभव, प्रतिबद्धता संग्रह में मैं के कई शेड्स हैं देखें–

गलत हूँ या सही जो कुछ भी हूँ जैसा अभी मैं हूँ/दिशा भ्रम हो नहीं सकता तुम्हारा सारथी मैं हूँ। (पृ. 21) जुड़ा हूँ आज भी अपनी जड़ों से/हवाओं में नहीं बहता रहा हूँ (पृ.17) भटका तमाम उम्र मैं खुद की तलाश में/या मैं नहीं मिला या मेरा घर नहीं मिला (पृ.24) चीख चीखकर है मुझ से कोई कहता है/मेरे भीतर इक सन्नाटा रहता है (पृ.29) जीता जग से खुद से हारा/ढूँढ़ रहा हूँ अपना चेहरा (पृ.38) सौ बार देखो, कैसे समझाऊँ, कोई अपना ढूँढ़ रहा हूँ, बस तेरी सादगी, शीर्षक की ग़ज़लों में मैं के ढेर सारे पुख्ता बयान मिलते हैं। जो शाइर के मिजाज, विचार और प्रतिबद्धताओं को समझने में हमारी मदद करते हैं। आत्मानुभूति की यह नैसर्गिकता आत्म विश्लेषण से प्रारंभ होकर जीवन के विविध अनुभवों से गुज़रकर, अपने समय से मुठभेड़ करते हुए दर्शन की सीमा में प्रवेश करती है जहाँ दृश्य भी नहीं है और दृष्टा भी।

'तुम' को लेकर संग्रह में कई अशआर हैं। तुम जो भीतर भी है और बाहर भी, दूर भी, पास भी, सत्य भी और कल्पना भी, हिम्मत भी, कमजोरी भी, विरह भी और मिलन भी कुछ शैर देखें–

जो मैं हूँ बस वही है तू/जो तू है वही मैं हूँ (पृ.21) मैं तुमसे बात करता हूँ (पृ.27) मैं तुमसे दूर होता हूँ तो अपने पास होता हूँ (पृ.27) खुद के भीतर बस मैंने तुमको देखा/बाकी तो सारा जग बाहर रहता है (पृ.29) तेरे नज़दीक उतना आज भी हूँ (पृ.45) इसी तरह तेरी कारीगरी/हट जाए तो अच्छा है/अपने घर आया/जाने कहाँ से है/की शीर्षक ग़ज़लों में भी इस संबोधन से शैर कहे गए हैं।

किशन तिवारी अपने समय की पूरी ईमानदारी और सजगता के साथ जांच परख करते हैं, उसके प्रश्नों से मुठभेड़ करते हैं। उसके अंतर्विरोधों को अभिव्यक्ति देते हैं। भ्रष्ट सियासत, पंगु व्यवस्था, अनय, असंगति, बाज़ार सभी उनकी ग़ज़ल के दायरे में हैं। वह दर्शक भी हैं और भोक्ता भी। शैर देखें–

लाये हो बाजार घर में, घर कहीं गुम हो गया/अब कहाँ से लायेंगे घर, सोचता कोई नहीं (पृ.28) आजकल अपना शहर भी अनमना लगने लगा/चाहता जो कुछ भी उसकी वर्जना लगने लगा (पृ.30) आदमी है आजकल बीमार कुछ तो कीजिये/हो गया जाने कहाँ गुम प्यार, कुछ तो कीजिये (पृ.40) सबके सब सीना ताने हैं/सबकी अपनी दूकानें हैं (पृ.44)

इसी तरह फूल, मौसम, खुशबू, नदी, साहिल, समंदर, राह, राही; मंजिल, आइना, चेहरा और सच से संबद्ध भी कई अशआर संग्रह की ग़ज़लों में हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने समय के याथार्थ को पकड़ने, दुनिया को और बेहतर बनाने, इंसानियत की नई परिभाषा गढ़ने, सच को, खोजने की छटपटाहट बेचैनी उनकी ग़ज़लों में दिखाई देती है। इस संग्रह का सार तत्व कुछ वाक्यों में

किशन तिवारी ने अपनी ग़ज़लों में अपनी भाषा के मुहावरों को गढ़ने की ईमानदार कोशिश की है। ग़ज़लों की भाषा संवाद और संपर्क की ठेठ हिन्दुस्तानी भाषा है। न फारसी युक्त उर्दू और न संस्कृत निष्ठ हिन्दी। ग़ज़लों में उनका भाषा व्यवहार सरल, सहज सम्प्रेषणीय है।

उनकी ग़ज़लों को खाद, पानी, हवा, जमीन पारंपरिक ग़ज़लों से ही मिली है। संग्रह में चौरासी ग़ज़लें हैं और करीब चार सौ पच्चीस शैर हैं इनमें बहुत कुछ शैर कथ्य के दुहराव और सपाट बयानी के शिकार हैं।

किशन तिवारी पहला मिसरा जिस तेवर से उठाते हैं दूसरे मिसरे में उनके कथ्य की कमान ढीली पड़ जाती है। हालांकि संग्रह में यह कम जगह दिखाई देता है पर है।

ज्यादा खूबियों और कम खामियों वाले इस ग़ज़ल संग्रह को आपकी मुहोब्बत मिले, चिन्तन मिले, यह संग्रह समकालीन ग़ज़ल की किताब में कुछ नए पन्ने जोड़े यही मेरी मुराद है।

●

कृति – 'सारथी मैं हूँ' (ग़ज़ल संग्रह)
ग़ज़लकार – डॉ. किशन तिवारी
प्रकाशक – पहले पहल प्रकाशन, भोपाल
मूल्य – 150/– रूपये

संपर्क–10 प्रियदर्शिनी ऋषि वैली,
ई–8 गुलमोहर एक्सटेंशन,
भोपाल– 462039 (म.प्र.)
मो.– 09425371874

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा

कविताओं और रेखाँकनों की जुगलबंदी

'केनवास पर शब्द' – समीक्षक: जहीर कुरेशी

संदीप राशिनकर पेशे से आर्केटेक्ट है। साहित्य संसार में उनकी छवि राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में हज़ारों अभिनव रेखाँकनों के प्रकाशन से प्रतिष्ठित एवं सुपरिचित चित्रकार की है। अनेक सुप्रतिष्ठ पत्रिकाओं में मेरी ग़ज़लें संदीप राशिनकर द्वारा बनाए गए रेखा–चित्रों से और अधिक मुखर हुई हैं।

हाल ही में, अन्सारी पब्लिकेशन, प्रसार कुँज, सेक्टर पाई, ग्रेटर नोएडा द्वारा प्रकाशित संदीप राशिनकर का कविता–संग्रह 'केनवास पर शब्द' मंज़रे–आम तक आया है। 'केनवास पर शब्द' शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि यह एक चित्रकार कवि का कविता– संग्रह है– जिसमें पच्चीस मुक्त–छंद कवितायें और उनतालीस हिन्दी ग़ज़लें संग्रहीत की गई हैं। प्रत्येक कविता और ग़ज़ल के साथ संदीप का अमूर्त रेखाँकन है– जो पुस्तक की रचनाओं को पढ़ने की एक ललक पाठक के मन में पैदा करता है। इन चौसठ रेखाँकनों को आप पुस्तक का अतिरिक्त आकर्षण मान सकते हैं।

वरिष्ठ कवि सरोज कुमार के अनुसार 'संदीप वैसे नियमित कवि शायद नहीं हैं, जैसे कि वे नियमित चित्रकार हैं।' मैं भी मानता हूँ कि अपने रेखाँकनों से विश्राम लेने के अल्प–काल में संदीप राशिनकर कवितायें लिख लेते हैं। एक प्रकार से ये कवितायें और ग़ज़लें एक स्वाद बदल विधा के रूप में पाठकों के सामने आई हैं। ऐसे प्रयोग बहुत–से बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार करते आए हैं.... कर रहे हैं। 'केनवास पर शब्द' के रूप में संदीप राशिनकर ने भी अपनी कविताओं और रेखाँकनों की जुगलबंदी का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कविता – संग्रह के पहले खण्ड में संदीप की पच्चीस मुक्त–छंद कवितायें हैं।

उन पच्चीस कविताओं में भी 'दौड़' कविता पाठक का सबसे अधिक ध्यान खींचती है। ''दौड़ के लिए/अभिशप्त इस समय में/हर एक को/होना है शामिल/इस अनिवार्य दौड़ में!/ हालाँकि ठीक–ठीक कोई नहीं जानता/कि क्यों दौड़ना है/क्या है दौड़ के नियम/और कहाँ है नियत/इस दौड़ का गंतव्य!'' बच्चे के जन्म से पहले ही शुरू होने वाली इस दौड़ की आपाधापी पाठक की संवेदना को झकझोरती है।

संग्रह में एक और कविता है– 'मुझे मालूम है'। कविता में संदीप इक्कीसवीं सदी के जटिल मनुष्य के मन में प्रवेश करते हैं– जो हानि–लाभ का हिसाब लगा कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामने वाले से बोलता है, ठहाके लगाता है, हँसता है या केवल मुस्कुराता है। कविता का उपसंहार करते हुए अंत में संदीप कहते हैं– ''जोड़–घटाव के लय में/तुमने पा ली है विशेष–योग्यता/मगर तुम/तुम्हारी मौलिकता/तुम्हारी सहजता/दिनों–दिन खोते जा रहे हो।''

संदीप राशिनकर की अधिकाँश छन्द–मुक्त कवितायें बहुत लंबी नहीं है। आकार के लिहाज़ से, कुछ तो लघु कविताओं की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ''मौन'' पर चार–छोटी–छोटी कविताओं के क्रम में कविता क्र. 3 याद रखने के लिए बाध्य करती है– ''मौन पत्तों की सरसराहट ने/मौन मौसम को/संवादों से भर दिया/तोड़ कर खुद को/प्रकृति को हरा–भरा घर दिया!''

कविताओं में 'कन्फेस', 'पहाड़', 'माँ', 'सबूत', 'धरती और बादल' कविताओं पर बात की जा सकती है।

'कैनवास पर शब्द' कविता–संग्रह में बुजुर्ग ग़ज़लगो अजीज़ अंसारी की टिप्पणी 'हिन्दी ग़ज़ल का रोशन सितारा राशिनकर' मेरे गले नहीं उतरती। रोशन सितारा बनने के लिए अभी संदीप को बहुत मेहनत करनी है। उसके लिए स्थूल तौर पर उन्हें ग़ज़ल की बहरों से दो–चार होना पड़ेगा। उसी के बाद कवि से तग़ज़्ज़ुल, शेरियत, भाषा का बरतना, नव्यता, मुहावरेदारी और शब्दों के रख–रखाव आदि की चर्चा की जा सकती है।

उन सब ख़ामियों के बावजूद, संदीप के शेरों में कहीं–कहीं अनायास जुगनू चमकते हैं। यथा–

साथ तेरा अहसास तो है,
कोई मेरे पास तो है
कोहरा इतना गहराया है,
सब कुछ साया ही साया है।

स्वार्थवश आज के जटिल आदमी की मानसिकता में अनायास क्या बदलाव आता है, उस दृश्य को 'क्लिक' करता संदीप का एक उम्दा शेर–

पकवान सब रखे हैं दिखावे की मेज़ पर,
मतलब के वास्ते ये बिछा मेज़पोश है।

आदमी की मूल–भूत आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा और मकान) को ले कर संदीप का एक सहज शेर–

थोड़ा कपड़ा, थोड़ी रोटी,
छोटा–सा आवास चाहिए।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस चाक–चौबंद दुनिया में शरीफ लोगें के साथ क्या सुलूक होता है, उसके लिए एक शेर–

शरीफों की होती है दुनिया में अब,
बड़ी जग–हँसाई, ग़ज़ब हो गया।

कुल मिला कर, संदीप राशिनकर का 'केनवास पर शब्द' कविता–संग्रह कविताओं और रेखाँकनों की एक ऐसी जुगलबंदी है– जो कविताओं के साथ–साथ रेखाँकनों के लिए भी खरीदा जा सकता है। इस नयनाभिराम काव्य पुस्तक का रू. 250 मूल्य कोई अधिक नहीं है।

●

पुस्तक :– केनवास पर शब्द (कविता–संग्रह)
कवि :– संदीप राशिनकर
प्रकाशक :– अन्सारी पब्लिकेशन, असार कुँज, सेक्टर–पाई, ग्रेटर नोएड (उ.प्र.)
मूल्य :– रू. 250/–

संपर्क– 108, त्रिलोचन टावर, संगम सिनेमा के सामने, गुरूबक्श की तलैया
पो.ऑ.जी.पी.ओ., भोपाल – 462001 (म.प्र.)
मो.– 09425790565

सुमन शेखर के दो काव्य संग्रह

।। गुम होती लड़कियाँ ।।
प्रकाशक – एजुकेशनल बुक सर्विस
एन–3/25 ए. डी.के. रोड, मोहन गार्डन, उत्तम नगर
नयी दिल्ली – 110059
मूल्य – 400/–

।। बहुत जरूरी है रोटी ।।
प्रकाशक – प्रगतिशील प्रकाशन
एन–3/25 डी.के. रोड, मोहन गार्डन, उत्तम नगर
नयी दिल्ली – 110059
मूल्य – 400/–

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतिरिक्त

इस अंक में विशेष कवि के रुप में हिमाचल के युवा कवि **सुरेश सेन निशांत** को अपनी टिप्पणी के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं, कवि आलोचक ओम भारती । सुरेश सेन ने अपनी लोकबद्ध कविताओं के माध्यम से देश के साहित्यिक फलक पर अपनी विशेष पहचान बनाई है । उनकी कविताओं की शुरुआत आकंठ से मानी जाती है । **प्रभा मुजुमदार** की कविताएं स्त्री विमर्श पर केन्द्रित हैं । महिलाओं के अधिकारों और उनकी सामाजिक बराबरी की हिस्सेदारी पर चर्चाऐं होती रहती हैं, चिन्ता भी जताई जाती है लेकिन वास्तविकता तो यह है की आज भी वे शोषण और अन्याय की शिकार हैं । उनके प्रश्न सही हैं, उत्तर देने के लिए विवश करते हैं । **रजनीकांत शर्मा** की कविता हाल ही में हुए मुजफ्फरनगर के दंगो की ओर इशारा करती है और सवाल करती है कि हिन्दू–मुसलमानों को आपस में लड़ाने वाला वह तीसरा कौन है ? हमें उसकें षड़यंत्र को समझना होगा और तोड़ना भी होगा जिससे कि सभी समुदायों में भाईचारा बना रहे **महाश्वेता चतुर्वेदी** कि पहली कविता में भौतिकवाद की अंधी दौड़ में आदमी के भटकने और मूल्यों की गिरावट के प्रति चिंता है, दूसरी कविता उनके संघर्ष को व्यक्त करती है । वे पतझड़ में भी खुशी खोज लेती हैं। वे चंदन की तरह शीतलता और खुशबू बिखरेना चाहती हैं, व्यालों का उन्हें भय नहीं। तीसरी कविता रोजमर्रा के कामों में लिप्त जीवन की कहानी है। **महेश अग्रवाल** की ग़ज़लों के हर एक शैर पर वाह निकल जाती है। नदी पार करने के लिए पुल बनाना जरूरी है, आश्कों को मोती बनाना भी जरूरी है। खुशियां यू हीं नहीं मिल जाती, श्रम और संघर्ष जरूरी है, तभी तो बंद द्वार खोले जा सकेगें। आदमी को मारने के लिए अनेक तरीके हैं, जरूरी नहीं है कि उसे जहर देकर ही मारा जाए। जीवन भले ही कम दिन का मिले लेकिन वह खुबसूरती के साथ जिया जाए तो बेहतर है। हर एक ग़ज़ल अपने समय की सच्चाई को बयान करती है और देर तक अपना प्रभाव छोड़ती है। **नितिन जैन** की ग़ज़लें भी यहां हैं। अख़बारों में प्रायः हत्या, लूट, बलात्कार जैसी मानव विरोधी खबरें पढ़ने को मिलती हैं जो समाज के हालातों को बयान करती हैं कहीं कोई अच्छी खबर मिल जाए तो सूकुन मिलता है। आदमी अपने आप में इतना व्यस्त हो गया है कि उसे पत्राचार करने की फुरसत ही नहीं है कवि अपने गांव की मिट्टी – फसलों को याद करता है, उसकी इच्छा है कि वह फसल बनकर उगे। **पद्मनाभ गौतम** की कवितायें प्रेम जैसे विषय पर केन्द्रित हैं जो लगभग कविताओं से गायब होता जा रहा है। प्रेम की गहराई और ऊँचाई को मापना असंभव है, वह तो सूरज की रंग बिरंगी किरणों और मौन में व्याप्त है। **डॉ. मधुर नज्मी** की ग़ज़लों में भी कुछ इस तरह का भाव है, आपकी यादो के चराग़ों से सब तरफ उजाला ही उजाला है या कि फूलों का खिलना दिलवर का ही मुस्कराना है। दोनों ग़ज़लें पाठकों को पंसद आएंगी। **एम.एस.पटैल** कवि एवं अनुवादक आकंठ के अभिन्न सहयोगी की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंग्रेजी कविता टिप्पणी सहित इस अंक में है। यह कविता हमें दिल्ली में हुए दामिनी के साथ सामूहिक बलात्कार और उसकी नृशंस हत्या की याद दिलाती है उस समय पूरा देश आक्रोशित हो उठा था, फलस्वरूप नया कानून भी बना। अभी भी घटनायें रूक नहीं रहीं हैं। जब तक समाज का सोच नहीं बदलेगा, ये घटनायें नहीं रूकेंगी। दामिनी की बरसी पर ये कविता आकंठ में उस बहादुर लड़की के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करती है। **जया नर्गिस** की ग़ज़लें भी इस अंक में हैं। प्रेम का दर्द और अप्राप्त की स्मृति उनकी ग़ज़लों को गंभीर अभिव्यक्ति देती हैं। वह एक ऐसा चेहरा है जिसका अक्स उनके शैरो में उभरता है और मिटता भी नहीं। उनके पास माँ की दुआएँ हैं जिससे उनका कठिन सफर आसान होगा। उन्हें अहिन्दी भाषी – हिन्दी लेखिका के बतौर सम्मानित किया गया है, आकंठ की और से उन्हें बधाई और शुभकामनायें। **शिवकुमार अर्चन** जो अच्छे गीतकार हैं, **किशन तिवारी** के ग़ज़ल संग्रह ''सारथी मैं हूँ'' की सुचिंतित और सुव्यवस्थित समीक्षा ने इस अंक को बेहतर बनाने में सहयोग किया है उन्हें धन्यवाद। इसी तरह **संदीप राशिनकर** जो कवि एवं चित्रकार हैं, ग़ज़ल भी लिखते हैं के संग्रह ''कैनवास पर शब्द'' की समीक्षा सुप्रसिद्ध शायर **ज़हीर कुरैशी** ने लिखी है, वह भी इस अंक की एक उपलब्धि है । **चंद्ररेखा ढडवाल** धर्मशाला (हि. प्र.) की वरिष्ठ कवयित्री की कविताएं हिमाचल के दूषित होते हुए पर्यावरण की चिन्ता के साथ ही साथ पेड़ों, पहाड़ों और नदियों के सौन्दर्य को बचाने की चिन्ता व्यक्त करती हैं और आम लोगों के प्रश्न भी करती हैं कि इस अव्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए वे तैयार हों क्योंकि पर्यावरण बचेगा तो कविताएं भी बची रहेंगी । माँ किसी एक की नहीं वरन् वह पूरे पड़ोस, गांव की होती है । उसकी संवेदना सभी के प्रति होती है वह सभी की भलाई चाहती है । **मुकेश जैन** संभावनापूर्ण युवा कवि हैं, राजनीति के फरेब के विरुद्ध उनकी कविताएं हैं । बन्दूकों के प्रति वे आक्रोशित हैं और उनका वे विरोध करते हैं । **जर्नादन मिश्र** आकंठ में पहले भी छप चुके हैं । जीविका चलाने के लिए एक ओर जहां धन की आवश्यकता होती है तो दूसरी ओर सांसारिक बंधनों से मुक्ति की कामना भी की जाती है । लेकिन इस आपाधापी में कुछ भी नहीं मिल पाता, न धन न मोक्ष । 'गुनाहगार' कविता में आदमी की जो विवशता दर्शाई गई है, उसके विरुद्ध अंततः हमें खड़े होना ही होगा । **सजीवन मयंक** की गजल दामिनी के साहस और उसकी बहादुरी को व्यक्त करती है नींव अगर मजबूत है तो छत भी मजबूत रहेगी इसलिए हमारे इरादे सुदृढ़ होना चाहिए । मनुस्वामी के कविता संग्रह की समीक्षा **डॉ. सविता मिश्र** ने की है जो उनकी कविताओं की गहराई से पड़ताल करती है ।

आकंठ के सभी सहयोगी लेखकों / पाठकों के लिए नववर्ष 2014 की हार्दिक शुभकामनाऐं । सहयोग बनाए रखें ।

सं. हरिशंकर अग्रवाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकंठ
प्रगतिशील लेखन के लिए
पंजी. सं. MPHIN/2000/5141

दिसम्बर 13 - जनवरी 2014
वर्ष 12 अंक 151–152

संपादक :-
हरिशंकर अग्रवाल

सम्पादन - संचालन एवं प्रबंध पूर्णतः अव्यवसायिक

पत्रिका में प्रकाशित विचारों के लिए लेखक उत्तरदायी सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं । विवादों के निपटारे के लिये न्याय क्षेत्र पिपरिया ।

अक्षर संयोजन - क़ादरी आफसेट एंड कम्प्यूटर, पिपरिया (म.प्र.)
फोन : 07576-222671

सम्पर्क -
इंदिरा गाँधी वार्ड, तहसील कालोनी, बनवारी रोड, पिपरिया 461775 (म.प्र.)
मो. 9424435662, फोन 07576-224360

श्रीमती कृष्णा अग्रवाल की ओर से ईदू खाँ द्वारा क़ादरी प्रिण्टर्स, मंगलवारा पुराना बस स्टेन्ड, पिपरिया जिला होशंगाबाद (म.प्र.) 461775 से मुद्रित एवं श्रीमती कृष्णा अग्रवाल द्वारा इंदिरा गांधी वार्ड, तहसील कालोनी, बनवारी रोड, पिपरिया, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) 461776 से प्रकाशित.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंजी सं. MPHIN/2000/5141 D75219, 27/01/2014

सफ़र वही, मंज़िल नई

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश की बागडोर संभालते ही विकास को नयी गति देने के निर्णय लिये।

- अब, गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों को गेहूं के साथ चावल भी 1 रुपये किलो मिलेगा।
- मध्यम वर्ग की समस्याओं के समाधान के लिए, मध्यम वर्ग आयोग का गठन होगा।
- व्यापार संभावनाएं बढ़ाने, मध्यप्रदेश व्यापार संवर्धन मंडल का गठन होगा।
- और अब खेतों को सड़कों से जोड़ने के लिए खेत-सड़क योजना बनी।
- मुख्यमंत्री कन्यादान योजना की राशि 15 हजार रुपयों से बढ़कर 25 हजार रुपये हुई।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

विकास के सफ़र पर निरंतर-मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh